प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद हैं? 10.2.68

ओमशांति। रुहानी बच्चों को रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। भक्ति अलग चीज है, ज्ञान अलग चीज है और शरीर निर्वाह अर्थ व्यापार करना वह अलग चीज है। वह तो भक्तिमार्ग में करना होता है। ज्ञानमार्ग में भी करना होता है। सतयुग में भी तो खावेंगे–पीवेंगे व्यापार आदि करेंगे ना। भक्तिमार्ग में भी करेंगे ; परंतु वह होता है पवित्र गृहस्थ व्यवहार, यह होता है अपवित्र गृहस्थ व्यवहार। शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करना होता है। बाकी ज्ञान और भक्ति यह दोनों अलग चीज़ है। मनुष्य जब विकारी है तो भक्ति करते हैं। निर्विकारी मनुष्य भक्ति नहीं करते हैं। सतयुग में भक्ति होती नहीं। बाकी शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करते ही हैं। वह तो शरीर का धर्म है। बाकी भक्ति बिल्कुल अलग है। ज्ञान अलग है। मनुष्य भक्ति करते हैं जिसका फल भगवान आकर देते हैं। भगवान को आना पड़ता है ना। क्या फल, क्या वर्सा या क्या जायदाद देंगे? नई दुनियां की जायदाद। तो ज्ञान और भक्ति यह यह मनुष्य का अलग कर्तव्य है। भक्ति करते हैं फिर ज्ञान लेना है सदगति के लिए। ऐसे नहीं कि भोजन खाया जाता है सदगति के लिए। वह अलग है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते पवित्र रहो। बाकी तुम भक्ति आधा कल्प से करते आये हो। जिससे दुर्गति को पाया है। अब आया हूं तुमको रचता और रचना के आदि,मध्य ,अंत का ज्ञान देने लिए। बाकी शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना है। वह अलग है। पवित्र जरूर बनना है। वह है ही वायसलेस वर्ल्ड, शिवालय। खाते–पीते शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते पवित्र रहते हैं। यहां खाते–पीते कर्म करते सब पतित ही हैं। वहां हैं पावन। यहां हैं पतित। अब उनको चेंज कौन करे? बुलाते हैं हे पतित–पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। ज्ञान से ही मनुष्य पावन बनते हैं, न कि भक्ति से। सन्यासी लोग भी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। जन्म लेकर बड़े होकर फिर घर छोड़ते हैं। गोपीचंद आद(आदि) राजा थे। शादी आद(आदि) कर बाद में सन्यास आद(आदि) धारण किया। वह कोई राजयोग नहीं सीखा। राजयोग सिखलाने वाला होता ही एक है। दूसरा कोई सिखलाय न सके। राजाई होती है है सतयुग में। बाप तुमको सतयुग का मालिक देवता बनाने आये हैं। तो दैवी गुण भी चाहिए ना। कोई को सिगरेट पीना नहीं छूटता, कोई का शराब पीना, जुआ खेलना नहीं छूटती, विकार नहीं छूटती। तो समझो हम लायक नहीं हैं उंच पद के। धणी का बनकर फिर ऐसा कोई गंदा काम न करना चाहिए। सिगरेट पीना, जुआ खेलना , विकार में जाना यह सब पाप है। चोरी करना भी पाप है। कहते हैं ना कख का चोर सो लख का चोर। कई तो चोरी भी करते हैं, छी2 काम करते हैं। बाप कहते हैं तुम तो ब्राह्मण हो। तुमको पवित्र देवता बनना है। दैवी गुण जरूर धारण करनी है। कोई को रास्ता न बताते हैं यह भी आसुरी गुण हैं। आसुरी गुण होंगे तो तुम देवता बन न सकेंगे। तूफान आये भल ;परंतु कर्मेंद्रियों से ऐसा कुछ काम न करना है। हबछ होती है ; परंतु कर्मइंद्रियों से चोरी आद नहीं करना है। छिपाय कर उठाना न चाहिए। बिगर छुट्टी यज्ञ से कोई चीज़ उठाई वह भी चोरी है। बहुत हैं जो छिप कर खाते हैं। चोरी करते हैं। यह तो शुरू से ही चला आया है। तुमको मालूम है कोई साथ दुश्मनी होती थी तो उनका कपड़ा फाड़ देते थे। चीज़ उठा लेते थे। यह तो पिछाड़ी तक कचड़ा रहेगा। हल्का पद पाने वाले भी तो हैं ना। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं ,ऐसा देवता बनो। बाप थोड़े ही चाहेंगे कि पाई–पैसे की चोरी पर पद भ्रष्ट बनो। जरा भी कोई बिगर पूछे खाते हैं तो चोरी का पाप हो जाता है। जिसको ही लोभ कहा जाता है। माया बहुत उल्टी काम कराती है। पता नहीं पड़ता है। कोई भी चीज़ बिगर पूछ न उठानी चाहिए। किसके बिस्तरे पर नहीं बैठना चाहिए। पराये बिस्तरे पर बैठना यह भी चोरी है। यहां तो तुम सेलीवेट हो ना। पता नहीं कैसे बिस्तरा हो। छूना भी न चाहिए। बाप कहते हैं सब आसुरी सम्प्रदाय है। भार खाते हैं ना। भार विख को कहा जाता है। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हरामखोर..... परंतु टिकाने में जो बैठ पढ़ाते उनसे अर्थ पूछो तो सुनाने में लज्जा आवेगी। इस दुनियां में पावन एक भी हो न सके।

पावन दुनियां है ही सतयुग। साधू–सन्यासी भी पावन बनने लिए स्नान आदि करने जाते हैं ना। गंगा के पानी के बीच में बैठ तपस्या करते हैं। सतयुग में यह भक्ति की बातें वा शास्त्र आदि कुछ भी नहीं होती। यह सभी है भक्ति मार्ग की सामग्री। बाप कहते हैं यह वेद–शास्त्र आदि पढ़ने वाले मेरे से मिल न सके। वह तो भक्ति करते, वेद–शास्त्र आदि पढ़ते2 नीचे ही गिरते आये हैं। मेरे से कोई भी मिलते नहीं। सीढ़ी में यह सब दिखाना चाहिए वेद–शास्त्र गीता ग्रंथ आदि2 फिर वहां लिखने चाहिए। भगवानुवाचः इन उपनिषद ,वेद–शास्त्र आदि पढ़ने से कोई भी मेरे को प्राप्ति नहीं करते हैं। यह तो हुई ज्ञान और भक्ति की बात। अब बच्चे शिव जयंति मनाने लिए भी तैयारियां कर रहे हैं। यह तो बाबा ने समझाया है शिवबाबा भारत में ही आते हैं। भारत ही सबसे बड़ा तीर्थ है। सभी मनुष्यों को पतित से पावन बनाने बाप भारत ही आते है। सिवाय एक भारत के बाकी सभी तीर्थ आदि वर्थ नॉट अपेनी हैं। भारत की महिमा क्यों नहीं, भारत तो अविनाशी खंड है ;क्योंकि अविनाशी परमपिता परमात्मा यहां ही आते हैं। उनकी शिवजयंति भी मनाते हैं। वह आते ही हैं सर्व की सदगति करते। कलियुगी वैश्यालय को सतयुगी शिवालय बनाने आते हैं। इसलिए भारत ...सबसे उंच ते उंच तीर्थ स्थान है। प्वाइंट तो बहुत है। फारेनर्स को भी समझाने में समझ जावेंगे। भारत अविनाशी खंड है। बाकी सभी खंडों का विनाश हो जाता है। बाप भारत में ही आते हैं। गीता है ही भारत की। संगमयुग गीता का एपीसोड है। मुख्य गीता ही खंडन की हुई है। यही बड़ी ते बड़ी भूल है। यह अच्छी तरह से समझाओ। गीता श्रीकृष्ण ने नहीं गाई। कृष्ण तो 84जन्म लेते हैं। परमात्मा तो पुनर्जन्म लेते नहीं हैं। यह फारेनर्स को भी मालूम होना चाहिए। यह कान्फ्रेंस आदि जो करते हैं वहां यह (गीता का भगवान कौन?) चित्र भी ले जाना चाहिए। बताना चाहिए इस भूल से ही भारत दुर्गति को पाया है। भारत की ही एकज भूल है। सर्वशास्त्रमई शिरोमणी गीता को खंडन कर दिया है। बाप कहते हैं कितनी तुम्हारी भूल है। ऐसे बेवकूफी की भूल कोई कर न सके। जो बाप की बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल और आधा कल्प पढ़ते रहे। तो झूठी बायोग्राफी पढ़ने से क्या हाल होगा? यह है तुम्हारी मुख्य बात। यह चित्र बड़े मुख्य स्थानों पर रखना चाहिए जहां पुलिस आदि का पहड़ा (पहरा) हो ; क्योंकि दुश्मन तो तुम्हारे बहुत हैं ना। यज्ञ में आसुरी सम्प्रदाय बहुत विघ्न डालते हैं। कहने से और ही बिगरते हैं। इसलिए गुप्त चुनरी पहननी होती है। कितने बड़े2 हैं। कितना उन्हों का मान है। करते कुछ भी नहीं। रचता और रचना का ज्ञान तो कोई भी मनुष्य मात्र में नहीं है। सिर्फ तुम ब्राह्मण कुल में ही है। उस ब्राह्मणों के कच्छ में है झूठी गीता। तुम ब्राह्मणों के पास है सच्ची गीता। पहले तो अपन को आत्मा समझे तब ही बाप को याद कर सकते हैं। नही ंतो याद नहीं कर सकेंगे। इस अंतिम जन्म में ही अपन को आत्मा समझने का(की) प्रैक्टिस करनी है। अपन को अविनाशी आत्मा समझे तब ही अविनाशी बाप को याद करे। आत्मा और परमात्मा के रूप का किसको भी पता नहीं है। भल कहते हैं चमकता है अजब सितारा ;परंतु याद थोड़े ही रहता है। तुम कहते हो आत्मा बिंदी है। परमात्मा भी बिंदी है। तो हंसी उड़ाते हैं। अरे, आत्मा को रियलाइज़ करना चाहिए ना। जिसे(जिसने) आत्मा और परमात्मा का(को) रियलाइजन किया है वह जनावर है। पहले तो यह समझना चाहिए मैं आत्मा हूं। मुझ आत्मा को 20जन्मों का, 50जन्मों का, 84जन्मों का पार्ट मिला हुआ है। अच्छा, तुम्हारे 30 जन्म पूरे हुए। बाकी समय कहां थे? आत्मा का भी कोई को पता नहीं है। यहां आत्मा और परमात्मा का रियलाइजेशन होता है। जिससे आत्मा का योग परमात्मा बाप से रहे और बाप से वर्सा पाय सके। सारा दिन विचार–सागर–मंथन करना चाहिए। अच्छे भक्त लोग जो होते हैं वह सवेरे उठकर माला फेरते हैं। सोने समय भी माला फेरते हैं। भक्त लोग जितनी मेहनत करते हैं उतनी यहां बच्चे नहीं करते। उनको तो अल्पकाल का सुख मिलता है। यहां तुमको 21जन्मों का अथाह सुख मिलता है। यह भी धारण होती रहे तभी भी खुशी का पारा चढ़ा रहे। बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं।

जो सर्विस करने वाले हैं उन्हों को खुशी रहती है। खुशी में ठगते हैं। कोई तो अंदर जलते–मरते रहते हैं। बाप पढ़ा रहे हैं। समझते हैं तो देवता बनने पुरुषार्थ करना चाहिए ना। बाबा जो कहे वह करना चाहिए। कब भी लोभवश चोरी आदि नहीं करनी है। कब भी मुख से कुवचन न बोलना चाहिए। भूत न आना चाहिए। बाप समझाते हैं कोई भी बात में मूंझना नहीं है। ऐसे नहीं ब्रह्मा कुमारियां ऐसी क्यों हैं? अरे, ब्रह्माकुमारियां कोई तो राजकुमारी बनेंगी, कोई तो प्रजाकुमारी भी बनेगी। चण्डाल का जन्म लेने वाले भी होते हैं ना। वह पूरा पढ़ते नहीं। और ही टीचर का माथा खपाते हैं। वह भी ड्रामा में है। सभी सेंटर्स पर ऐसे माथा खपाने वाले होते हैं। आपस में लड़ पड़ते हैं। फिर दो पार्टी कर देते हैं। ऐसे भी हैं ब्राह्मणी से भी लड़ पड़ते। अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते रहते हैं। मनुष्यों को पतित से पावन बनाने कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप को जान कर फिर कोई भूल करते हैं तो सौणा दंड पड़ जाता है। बाप को बुलाया है कि हमको सुखधाम का मालिक बनाओ। कांटे से फूल बनाओ तो श्रीमत पर चलना चाहिए ना। तब ही तो उंच पद पावेंगे। नही ंतो कल्प कल्पांतर पाई–पैसे का पद पाते रहेंगे। तभी बाप कहते हैं अपना जीवन तो हीरे जैसा बनाओ। भक्तिमार्ग में भी कौड़ी–मिसल, ज्ञान मार्ग में भी कौड़ी मिसल जीवन रहा तो बाकी मिला ही क्या? पिछाड़ी में आने वाले को पाई–पैसे का सुख मिलेगा। तुम तो 21जन्म सुख पाते हो। जैसे दीपमाला पर ढेर के ढेर मच्छड़ जन्मते हैं और मरते हैं। वैसे यहां भी देरी से आने वालों का क्या हाल होगा? उनमें और जंतुओं में क्या फर्क रहा? जन्म लिया थोड़ा सुख पाया, मरा। ऐसा जन्म देने तो बाप नहीं आये हैं। बाप आकर पढ़ाते हैं। कोई तो पुरुषार्थ कर सतयुग में 21जन्म लिए महाराजा भी बनते हैं। रात–दिन का फर्क देखो कितना है। नम्बरवार मर्तबे होते हैं ना। कोई राता,प्रेजीडेंट आदि कोई मेहतर। इसको कहा जाता है पास्ट के कर्म ऐसे किये हुए हैं तब ही यहां जन्म लिया है। ऐसे नहीं कि साहुकार तो फिर साहुकार के घर ही जन्म लेंगे। वह तब ले सकते हैं जब दान–पुण्य करेंगे और गुण भी अच्छे होंगे। बाबा का देखा हुआ है। एक राजा बड़ा ही फर्स्ट क्लास करोड़पति था। उनको बच्चा हुआ। राजकुमार ठहरा ना। अहोसौभाग्य राजा पास जन्म हुआ। अच्छा बड़ा होने से बच्चा संगदोष में आ गया। बाप मर गया। बस, जो भी पैसे थे 2मास में सब खतम कर दिये। जन्म तो अच्छे घर में मिला। फिर कर्म इतने बुरे किये तो फिर दूसरा जन्म क्या मिलेगा? डेड चमार जाय बनेंगे। बहुत साहुकार लोग वैश्याओं के पास जाते रहते हैं। क्या उनको अच्छा जन्म मिलेगा? तो इसमें भी जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, श्रीमत पर चलेंगे उतना ही फायदा होगा। जो फरमान मानते ही नहीं तो नाफरमानबरदार ठहरे ना। ऐसे कब भी दिल पर चढ़ न सके। बाप समझाते रहते हैं जब तक चार्ट न रखेंगे तब तक .....हो न सके। स्कूल में भी चलन का ,पढ़ाई का रजिस्टर होता है ना। बाप कहते हैं तुम अपना रजिस्टर रखो (तो) मालूम पड़े सारा दिन हम क्या करते हैं। शाम को रोज अपना चार्ट देखो। जो पाप आदि किये होंगे वह .....आय खड़े होंगे। कोई यज्ञ में नियम विरुद्ध काम किया होगा तो वह सामने आ जावेगा। फिर उसमें यह भी लिखो फलाने टाइम यह खाया। फिर यह खाया। यह पीया। तो मालूम पड़ेगा कहां लोभ तो नहीं किया। हम कितना बारी दिन में खाते हैं। अब यह खाया–पीया सब लिखना चाहिए तब ही सुधार होगा। बाप समझ जाते हैं इनके तकदीर में कुछ है नहीं। रजिस्टर रखते नहीं। समझते थोड़े ही हैं भगवानुवाच है। समझते हैं यह दादा कहता रहता है। बच्चों को मालूम नहीं पड़ता है कौन कहते हैं। कुछ भी रिगार्ड नहीं। पाप करते रहते। रिगार्ड रख न सके। रात को बैठकर सारा दिन के चाल को देखो। सारा दिन क्या खाया,पीया। अपन पर नज़र तब रख सकेंगे। नहीं तो माया पादर लगाती रहती है। बेकायदे बोलते रहते हैं वह भी माया के पादर लगती है। इसलिए चार्ट लिखना अच्छा है। इस पर सावधानी मिलेगी ऐसे2 न करो। फिर दूसरे दिन देखो कितना फर्क पड़ा। फिर वही भूल तो नहीं की। .....काम छोड़ देनी चाहिए। अच्छा ,बच्चों को गुडमार्निंग।